विपश्यना

[साधकों का मासिक प्रेरणापत्र]

रजि. नं. १९१५६/७१

पोस्टल रजि. नं. NS (M)–16/85

वर्ष १४ • धम्मई • बुद्धवर्ष २५२८ • फाल्गुन पौर्णिमा [शक] • दि. ७–३–१९८५ • अंक ९

प्रेरक प्रसंग

(५)

किसा गोतमी

चुटकी भर सरसो

भगवानके जीवनकालमें –

श्रावस्ती नगरी। अत्यंत निर्धन एवं समाजमें नीचे माने जानेवाले कुलमें जन्मी एक दुखियारी युवती। नाम गोतमी तिस्स (तिष्या)। परन्तु शरीरसे अत्यंत दुबली-पतली कृशकाय होनेके कारण घरवाले उसे गोतमी तिस्साकी जगह गोतमी किसा (कृशा) कहने लगे। धीरे-धीरे आसपासके लोगोंमें भी "किसा गोतमी" के नामसे ही प्रसिद्ध हो गयी।

किसी कर्म-संयोगके कारण उसका विवाह श्रावस्तीके एक उच्च जातिवाले धनी परिवारके सुयोग्य पुत्रसे हो गया। धन-धान्यसे भरापुरा संपन्न परिवार और सुन्दर स्वस्थ प्रेमिल पति। लगा दुखियारीके दुःखोंका अंत हुआ। किसा गोतमीका भाग्य फिरा। परन्तु वस्तुतः ऐसा हो नहीं पाया। पतिका अपार स्नेह पाकर भी उसने देखा कि परिवारके अन्य लोग उससे बेहद नाखुश हैं। दिन-रात सबकी सेवामें रत रहने पर भी परिवारवालोंके मनमें उसके प्रति अपार घृणा भरी है। एक तो गरीब की कन्या, तिस पर नीचे कुल की। जैसे कोढ़में खाज हो गयी। जाति, धनके मेदभावसे दूषित सड़ी-गली सामाजिक व्यवस्थाका भूत परिवारके लोगोंके सिर पर बुरी तरह सवार। इसलिए संबंध तो हो गया परन्तु परिवारवाले उसे स्वीकार नहीं सके। उनके ताने, बोली सुनते-सुनते बेचारीका हृदय छलनी-छलनी हो गया। इससे अच्छा तो किसी गरीब घरमें ब्याही जाती, किसी नीचे माने जानेवाले कुल में ब्याही जाती। यह सारी धन-संपदा किस कामकी ? घृणा और तिरस्कारका जीवन जीना दूभर हो गया। एक मात्र पतिका प्यार ही उसके जीवनका सहारा था।

विवाहके बाद कुछ वर्षों तक उसे कोई संतान नहीं हुई। इस स्थितिने परिवारमें उसके लिए और तिरस्कार जगाया। कुलका एक मात्र पुत्र निःसंतान रह जायेगा तो वंश कैसे चलेगा ? कैसी पुण्यहीना बहू घरमें आयी ? पुण्यशालिनी होती तो ऐसे खानदानमें ही क्यों जन्मती ? और फिर इतने ऊँचे कुल में ब्याही जाकर भी निपूती क्यों रहती ? यह सचमुच भाग्यहीना है। इस अभागिनकी वजहसे हमारे कुलका वंश नहीं चलेगा। इस प्रकारके अंगारे जैसे बोल उसके तन-मनमें विषादकी ज्वाला जलाते रहते। पर बेचारी असहाय ! क्या करती ? चुपचाप आंसू ढलकाती और सब कुछ सहती रहती।

परन्तु कुछ दिन बीतनेके बाद उसके दिन फिरे। उसे गर्भ रहा और दस मास पूरे होने पर उसने एक सुन्दर पुत्र-रत्नको जन्म दिया। सहसा जीवनमें रौनक आ गयी। परिवारमें पुत्रवती बधू का आदर होने लगा। सबकी मनोकामना पूरी हुई। उसने वंश चलानेके लिए परिवारको सुन्दर पुत्र जो दिया। जैसे जैसे पुत्र बढ़ने लगा, उसकी किलकारियोंने घरके वायुमंडलमें खुशियोंका माहौल भर दिया। सभी उसे गोदमें उठाए फिरनेके लिए लालायित रहते। अब घरवाले भूल गए कि बच्चेकी मां नीचे कुल की और गरीब खानदानकी है। वह गृहलक्ष्मीका सा सम्मान-सत्कार पाने लगी।

पालनेमें झूलनेवाला बच्चा अब घुटनोंके बल चलने लगा। उसकी अठखेलियाँ सबका मन मोहने लगीं। अब वह खड़ा होने लगा। डगमगाकर दो-चार पग चलने भी लगा। उसकी बाल-

धम्म वाणी

न गामधम्मो निगमस्स धम्मो,
न चापियं एक कुलस्स धम्मो।
सब्बस्स लोकस्स सदेवकस्स,
एसेव धम्मो यदिदं अनिच्चता॥

थेरीगाथा अट्ठकथा– १०/१.

यह जो अनित्यताका धर्म-स्वभाव है वह न किसी गांव विशेषका है, न किसी नगर विशेषका और न ही किसी एक परिवार विशेष का। यह अनित्यता तो देवताओं सहित समस्त लोकोंका धर्म-स्वभाव है।

सुलभ हरकतें सारे परिवारका मोद बढ़ातीं। घरके आंगनमें आनंद-की फुलझड़ियाँ फूट पड़तीं। किसा गोतमी अपने भाग्यको सराहती। बच्चेको गोदमें लेकर प्यारसे चूम लेती। इसी लाड़लेकी वजहसे उसके दिन फिरे। उसके दुख दूर हुए।

परन्तु खुशियोंके दिन बहुत शीघ्र पूरे हुए। एक दिन किसा गोतमीकी खुशियों पर बिन बादल आकाशसे बिजली पड़ी। घरके बाहर बगीचेमें खेलते हुए नन्हेंसे बच्चे को विषधर काला नाग डस गया। देखते देखते हंसने-मुस्करानेवाला चेहरा नीला पड़ गया। शरीर निश्चल हो गया। सांस रुक गयी। हृदयकी धड़कन बंद हो गयी। घरवालोंने बहुत भाग-दौड़ की। दवा-दारू की। जंतर-मंतर करवाए। पर कुछ काम न आया। बच्चेके प्राण पखेरू उड़ गए। घरमें हाहाकार मच गया। किसा गोतमीके दुःखका ठिकाना नहीं। हर मां अपने इकलौते पुत्र पर आसक्त रहती है। पर किसा गोतमीके लिए तो सुखका एक मात्र आधार यह बालक ही था। इसी के कारण उसके दिन फिरे थे। अब क्या होगा? वह दुःखके मारे पागल हो उठी।

जब लोगोंने कहा कि बच्चेके शव को श्मशान ले जाकर दफनायेंगे तो यह बोल उसके हृदयमें भालेकी तरह चुभ गए। यह लोग मेरे बच्चेको घरसे बाहर निकाल देंगे। मैं ऐसा कदापि नहीं होने दूंगी। उसने बच्चेकी लाशको कसकर छातीसे चिपका लिया। करुण क्रन्दन करने लगी — "नहीं, मेरा लाल अभी मरा नहीं है। जहरके नशेमें केवल बेहोश हो गया है। गहरी नींदमें सो गया है। कोई इसे होशमें ला दे। कोई इसे जगा दे। यदि सचमुच प्राण निकल भी गए हैं तो कोई ऐसी औषधि लाए जिससे प्राण वापस आ जाँय। यदि तुमसे नहीं होता तो मैं कहींसे मांगकर लाऊँगी, अपने लाल को जगाऊँगी।" वह बच्चेको छातीसे चिपकाए विक्षिप्त अवस्था में घरसे निकल पड़ी। घर घर लोगोंसे याचना करती। राहमें जो मिले उसीसे पल्ला पसारकर भीख मांगती, "मुझे कोई दवा दे दो, जिससे मेरा लाल जाग जाय। इसकी बेहोशी दूर हो जाय। यह मरा नहीं है।"

लोग उसे समझाते, "माई, यह मर गया है। अब कोई औषधि काम नहीं आ सकती। टूटीकी बूटी नहीं होती।" यह सुनकर वह और पागल हो उठती। बच्चेकी लाशको जोरोंसे छातीसे चिपकाती और किसी दूसरेके सामने दवाकी भीख मांगती।

उसकी ऐसी दशा पर एक भाई को बहुत दया आयी तो उसने कहा, "माई, कोई सामान्य वैद्य इसके लिए औषधि नहीं दे सकता। इस समय लोक में महाभिषक, महावैद्य बुद्ध उत्पन्न हुए हैं। शहरके बाहर उनका जेतवन विहार है। भगवान इन दिनों वहीं टिके हैं। उनके पास जा। वे तुझे उचित औषधि अवश्य देंगे।"

उत्साहसे भरी किसा गोतमी दौड़ती हुई जेतवन विहार पहुँची। भगवान उस समय साधकोंको साधनाकी बारीकियाँ समझा रहे थे। आकुल-व्याकुल किसा गोतमी बिना रुके भगवानके समीप पहुँच गयी और बच्चेकी लाश भगवानके चरणोंके पास रखकर फूट-फूटकर रोने लगी।

"भन्ते भगवान! लोग मुझसे मेरा लाल छीन लेना चाहते हैं। यह मरा नहीं है। भगवान! यह सो गया है, बेहोश हो गया है। आप इसे जगा दें, आप इसे होशमें ला दें।"

"बेटी! यह निष्प्राण है।"

किसा को धक्का लगा। वह फफक फफककर रोने लगी और बोली, "यदि निष्प्राण है तो भी भगवान! आप तो महाभिषक हैं। किसीने कहा आपके पास संजीवनी औषधि है। मेरे बच्चेमें नया प्राण फूंक दें। इसे औषधि अवश्य दें।"

भगवानने देखा ऐसी भावावेशभरी विक्षिप्त अवस्थामें यह धर्मकी कोई बात समझनेलायक नहीं है। भगवानने यह भी देखा कि पटाचाराकी तरह यह भी अपने पूर्व जीवनमें भगवान काश्यप बुद्ध की ७ बहनोंमें से एक रही है और उनके पास खूब तपी है। प्रभूत पुण्य-पारमिताएँ अर्जित की है। इस समय अपने किसी दुष्कर्मका फल भोग रही है। परन्तु अब इसकी दुःख-विमुक्तिका समय आ गया है।

भगवानने शांत गंभीर वाणीमें करुणाकी मंदाकिनी बहाते हुए कहा, "हाँ, बेटी! कहनेवाले ने ठीक ही कहा है। मैं भिषक ही हूँ, वैद्य ही हूँ। तुम्हें उचित औषधि अवश्य दूंगा।"

— "दीजिए भगवान! मैं आपका उपकार कभी नहीं भूलूंगी।" किसाके चेहरे पर आशाकी किरण चमकी।

— "नगरमें जाकर चुटकी भर सरसोंके दाने मांग ला।"

— "अभी ले आती हूँ भगवान।"

यूं कहकर किसा शीघ्रतासे उठी और जानेको उद्यत हुई।

— "परन्तु देखना, ऐसे परिवारसे लाना जिसमें आज तक कोई न मरा हो।"

— "हाँ-हाँ भगवान! ऐसे ही परिवारसे लाऊँगी।"

बच्चेको छातीसे चिपकाए वह नगरकी ओर बेतहासा भागी। अब मेरा बच्चा अवश्य जी उठेगा। जो पहला घर दिखा वहीं जाकर अपनी दुःखद कहानी सुनाई और चुटकी भर सरसों मांगी। घरवालोंने सहानुभूति पूर्वक कहा, "माई, तेरा लाल जी उठे। चुटकी भर क्या? चाहे तो मन भर सरसों ले जा।"

— "परन्तु तुम्हारे यहाँ कोई मरा तो नहीं न!"

यह सुनकर घरवालोंका मुँह उतर गया। "मरा कैसे नहीं माई! हमारे परिवारमें तो अनेक मरे हैं।"

यों एक-एक घर चुटकी भर सरसोंकी भीख मांगती हुई किसा गोतमी नगर के मोहल्ले मोहल्ले, गली गलीमें भटकती फिरी। उसे एक भी ऐसा परिवार नहीं मिला जिसमें कोई मरा न हो। दिन भरकी थकी मांदी शाम होते-होते होशमें आ गयी। बात समझ में आ गयी। घर घरमें लोग मरते हैं। बच्चे भी, जवान भी, बूढ़े भी, नर भी, नारी भी। नगरमें जीवित लोगोंकी संख्याके मुकाबले मरनेवालों की संख्या अधिक है। यह इतने सारे लोग अपने अपने प्रियजनोंके मरने पर मेरी तरह पागल नहीं हो उठे। मरना-जीना किसीके बसकी बात नहीं। भगवानने यह सत्य समझानेके लिए ही ही मुझे चुटकी भर सरसोंके दाने लानेको कहा।

बात तो बहुत साधारण थी। केवल चुटकी भर दानोंकी मांग। परंतु यही उस दुखियारीके हृदयमें धर्मकी चेतना जगानेके लिए प्रेरणाका पर्याप्त कारण बन गयी। उसका होश जागा। होश जागते ही बच्चेकी लाश दफनानेके लिए छोड़ी और जेतवन आश्रममें भगवानके पास आश्रय पानेके लिए चली आयी।

भगवानने उसे आते देखा तो पूछा, "क्यों बेटी! सरसोंके दाने मिले?"

—"नहीं भगवान! दाने तो नहीं मिले, पर खोया हुआ होश मिल गया। हर जनम लेनेवालेका मरना निश्चित है। पहले-पीछे सभी मरते हैं। कोई रुक नहीं सकता।"

भगवानने देखा अब इसकी मनोस्थिति धर्म समझने लायक है। उसे धर्मदेशना दी। सारे वातावरणको विमल प्रशांत धर्म-तरंगोंसे आप्लावित करते हुए भगवान बोले; "मृत्यु सभी प्राणियोंका अनिवार्य धर्मस्वभाव है। केवल गांववालोंका नहीं, केवल नगरवालोंका नहीं, केवल एक कुलके लोगोंका ही नहीं, यह तो देवताओं समेत सभी लोगोंका धर्म-स्वभाव है। सभी अनित्यधर्मा हैं, सभी मरणधर्मा हैं। इस सच्चाईको जो नहीं समझते वे पुत्रों, पशुओं और धन-संपत्तियोंमें आसक्त रहते हैं। मोह मूढ़तामें बेहोश रहते हैं और जन्म-जन्मांतरों तक बार-बार मृत्युके चंगुलमें पड़ते रहते हैं। जैसे नदीमें एकाएक आयी हुई बाढ़ गहरी नींदमें सोए हुए गांवको बहाकर ले जाती है वैसे ही इन प्रमत्त आसक्त लोगोंको बार-बार मृत्यु बहाकर ले जाती है।"

कोई इस मोह-निद्रासे जागे, अपने भीतर अनित्यबोध जगाए, उदय-व्ययका दर्शन करे तो ही जन्म-जन्मांतरोंके मृत्यु-दुःखसे सदाके लिए मुक्त हो सकता है।

—"सौ वर्षों तक बिना उदय-व्ययका दर्शन किए जीनेकी अपेक्षा उदय-व्ययका दर्शन करते हुए केवल एक दिनका जीवन ही अधिक श्रेष्ठ है, श्रेयस्कर है।"

महाकारुणिककी धर्मवाणीका अमृतरस कानोंमें पड़ते-पड़ते किसा गोतमीका अनेक जन्मोंका संग्रहित पुण्यफल जागा। शरीरके अणु-अणुमें धर्म-चेतना जागी। वह एकाग्रचित्त हुई, स्वमुखी हुई, अन्तर्मुखी हुई। "उदय-व्यय, उदय-व्यय" इस अनित्य धर्मका अपने भीतर सम्यक् दर्शन हुआ। उदय-व्यय, उदय-व्ययका दर्शन करते करते उत्पाद-निरोधका दर्शन हुआ। विरज-विमल धर्म-चक्षु खुले और चंद क्षणोंके लिए वहीं उसी अवस्थामें निर्वाणका साक्षात्कार हुआ। किसा धन्य हुई। श्रोतापन्न अवस्थामें प्रतिष्ठित हुई। नितांत दुःख-विमुक्तिके मार्ग पर प्रतिष्ठित हुई।

श्रद्धा और कृतज्ञता-विभोर हो उसने भगवानसे प्रव्रज्याकी याचना की। भगवानने अनुमति दी। किसा गोतमीने आदरपूर्वक भगवानकी तीन बार प्रदक्षिणा की, उन्हें नमस्कार किया और भिक्षुणी-विहारमें जाकर प्रव्रज्या ग्रहण की।

अब उसके दिन भगवानके सान्निध्यमें साधना करनेमें बीतने लगे। भगवानकी धर्मवाणी मनके बचे हुए मैल उतारनेमें सहायक सिद्ध हुई। वह बहुत दत्तचित्तहो विपश्यना साधनामें जुट गयी। एक दिन साधना करते हुए भगवानकी अमृतवाणी उसके कानोंमें गूंजी

"यो च वस्स तं जीवे अपस्स अमतं पदं।
एकाहं जीवितं सेय्यो पस्सतो अमतं पदं॥"

अमृतपद निर्वाणका साक्षात्कार किए बिना कोई भले १०० वर्ष का जीवन जी ले, परंतु उसके मुकाबले अमृतपद निर्वाणका साक्षात्कार करनेवालेका एक दिनका जीवन भी अधिक श्रेष्ठ है, श्रेयस्कर है।

इन प्रेरणाभरे शब्दोंने किसा गोतमीके मनमें धर्म-संवेग जगाया। मैंने क्षणभर निर्वाणका साक्षात्कारकर श्रोतापन्न अवस्था प्राप्त की परंतु नितांत विमुक्तिके लिए अर्हंत की निरोधसमापत्तिवाली निर्वाणिक अवस्थाका साक्षात्कार करना होगा। तभी आवागमनके भवचक्रसे छुटकारा मिलेगा। इस प्रेरणासे प्रेरित होकर दृढ़ पराक्रमसे विपश्यना करते हुए उसने क्रमशः सकदागामी, अनागामी और अर्हंत-फल प्राप्त किया। साधना सफल हुई। भवबंधन खुले। साधिका जीवनमुक्त हुई।

किसा गोतमी भगवानकी प्रमुख शिष्याओंमें से एक हुई। भिक्षुणियोंका जीवन अत्यंत सादगीका जीवन। पर उन भिक्षुणियोंमें भी सबसे अधिक सादगीका जीवन जीनेवाली किसा गोतमीको भगवानने मोटे, रूखे चीवर धारण करनेवालियोंमें अग्र होनेका पद प्रदान किया।

परम साध्वी किसा गोतमीने अपना शेष जीवन लोकसेवामें ही बिताया। कितनी दुखियारी नारियाँ उसकी प्रेरणा और मार्गदर्शनसे दुःख-विमुक्तिके मार्ग पर लगीं। किसा गोतमीके करुणाभरे चित्तने नारियोंके दुःखको खूब समझा। कितने प्रकारके दुःख? उपयुक्त वर व ससुराल न मिले तो दुःख। सपत्नी हो तो दुःख। संतान न

विपश्यना पत्र के स्वामित्व आदि का विवरण

पत्रिका का नाम– 'विपश्यना'

भाषा– हिन्दी

प्रकाशन की अवधि– प्रतिमास पूर्णिमा (शक)

पत्रिका के मालिक का नाम– सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट
२० शहीद भगतसिंह रोड, बम्बई–२३

प्रकाशन का स्थान– २० शहीद भगतसिंह रोड फोर्ट, बम्बई–२३

मुद्रक, प्रकाशक, संपादक का नाम– राम प्रताप यादव

राष्ट्रीयता – भारतीय

पता – धम्मगिरि, इगतपुरी–४२२४०३, (नासिक)

मुद्रण स्थान– अक्षरचित्र मुद्रणालय, सातपूर, नासिक-४२२००७

मैं राम प्रताप यादव एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वासानुसार सही है।

७-३-८५

राम प्रताप यादव
(प्रकाशक)

हो तो दुःख। हो तो गर्भ पालनेका दुःख। प्रसवका दुःख। संतानके लालन-पालन का दुःख। संतान दुराचारी हो जाय तो दुःख। संतान होकर मर जाय तो दुःख। स्वयं दुराचारिणी हो जाय तो दुःख। अपने पूर्व जन्मकी बहन पटाचाराका उदाहरण याद आया। दुराचरणके कारण पति, दोनों संतानों और मां-बाप व भाईके मरनेका असीम दुःख सहना पड़ा उसे। इस लोक-चक्रमें दुःख ही दुःख। जिस कल्याणकारी मार्ग को पाकर किसा स्वयं दुःखोंसे मुक्त हुई, वही औरोंको बांटने लगी।

कभी अपने भूतकालका सिंहावलोकन करती तो भगवानके प्रति कृतज्ञताके भावोंसे विभोर हो उठती। "मैं कितनी भाग्यशालिनी हूँ कि मुझे भगवान तथागत जैसे कल्याणमित्र मिले। कल्याण मित्रकी संगत मिलती है तो जीवन मंगलसे भर उठता है। दुर्जन से दुर्जन व्यक्ति इस सत्संगतिसे सज्जन हो जाता है। दुखियारा दुःख-विमुक्त हो जाता है। वह दुःख का भोगना छोड़कर दुःखका दर्शन कर लेता है। दुःख के मूल कारण का दर्शन कर लेता है। दुःख-विमुक्तिके मार्ग पर स्वयं चलकर उसका दर्शन कर लेता है और इस प्रकार नितांत दुःख-निरोध अवस्था परमपद निर्वाणका दर्शन कर लेता है।

मुझ जैसी दुखियारीने इसी एक जीवनमें नहीं, अनगिनत पूर्व जन्मोंमें भी कितने दुःख झेले हैं। न जाने मेरे कितने प्रियजन मरे हैं। इन मृत प्रियजनोंकी हड्डियाँ एक जगह एकत्र कर दें तो हिमालय जैसा पहाड़ खड़ा हो जाय। इनके मरने पर मैंने जितने आंसू बहाए हैं उन्हें एक जगह एकत्र कर दें तो सभी समुद्रोंके जलसे अधिक हो जाय।

महाकारुणिककी सत्संगतिके कारण ही मेरे सारे दुःख दूर हुए। मैंने शील, समाधि और प्रज्ञाके आर्य अष्टांगिक मार्ग पर चलकर धर्म के दर्पण में परम सत्यका साक्षात्कार किया। जन्म जन्म के बोझ उतर गए। हृदय में चुभा हुआ मर्ममेदी पीड़ादायी तृष्णाका तीर निकल गया। मैं कृतकृत्य हुई, विमुक्त हुई, धन्य हुई।"

ऐसा कल्याणकारी मार्ग सबको मिले!

ऐसी मुक्तिदायिनी प्रेरणा सबमें जागे!

कल्याण मित्र, **स. ना. गो.**

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
मंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–११० ००७.
की मंगल कामनाओं सहित
↓

दूहा धरम रा

खातो पीतो भी मरै, भूखो भी मर जाय।
अवधी जद पूरी हुवै, छण भर रुकन न पाय ॥१॥
धोळै दोपार्‌यां मरै, कोई काळी रात।
कोई संझा ही मरै, कोई मरै प्रभात ॥२॥
कोई सुख सैया मरै, नंगी धरती कोय।
कोई अम्बर मैंह मरै, गहरै समदर कोय ॥३॥
नगर निवासी ना बचै, बचै न गांव गंवार।
बचे न ई कुल गोत को, पड्याँ काळ को वार ॥४॥
छण आवै जद मोत को, रोक सकै ना कोय।
तत्छण जाणो ही पड़ै, फुरसत होय न होय ॥५॥
जनम लियाँ तो होवसी, मिरत्यू रो संजोग।
जनम मरण सैं छूटसी, बिपस्सना रै जोग ॥६॥

दोहे धर्म के

कोई बालक ही मरे, कोई मरे जवान।
कोई जर्जर हो मरे, मरना अमिट विधान ॥१॥
कोई निर्धन ही मरे, कोइ मरे धनवान।
धन ना रक्षा कर सके, मरना अमिट विधान ॥२॥
कोई अनपढ़ ही मरे, कोइ मरे विद्वान।
ग्रन्थ न रक्षा कर सके, मरना अमिट विधान ॥३॥
कोई दुर्बल ही मरे कोइ मरे बलवान।
कोई बचा न काल से, मरना अमिट विधान ॥४॥
कोइ मरे इस व्याधि से, कोइ मरे उस रोग।
कोइ मरे बिन रोग ही, होय मृत्यु संयोग ॥५॥
जो जनमा सो ही मरा, छूट सका ना कोय।
मुक्त हुआ जो जनम से, मृत्यु-मुक्त है सोय ॥६॥

सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक : **रामप्रताप यादव**, धम्मगिरि, इगतपुरी–४२२ ४०३. दूरभाष : ८६
मुद्रण स्थान : अक्षरचित्र मुद्रणालय, सातपूर, नासिक–४२२ ००७. टेलिफोन : ३०२५१ ● वार्षिक शुल्क रु. १०/–आजीवन शुल्क रु. १००/–

"विपश्यना" 3/85

पो. र. नं. NS(M) 16/85

Licence No. NS 18
Licensed to post without pre-payment

प्रेषक
सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट
विपश्यना विश्व विद्यापीठ
धम्मगिरि, इगतपुरी–४२२ ४०३
(नासिक, महाराष्ट्र)

To